2

कान्तारमेव वनमालिनमाश्रयेत

निर्विघ्न धीरपि भवान्मतिमाहभीत:।

न्यस्य प्रसह्य नु पदं पुरि मोहमय्यां

विद्वान्भवान्प्रकटयेत्स्वमहेश्वरत्वम्

शंसन्ति वा भवन्त इव महेश्वरत्वम्

शंसन्तीति भवन्तपि महेश्वरत्वम्

शंसन्तु नेच भवन्तं च सम्प्रभुत्वम्

~~शंसन्तु नेच भवन्तं च भवान् समानत्वम्~~

लोकेशमाहितमूर्ति: सुमहाविद्यालय प्राप्तिनकीर्ति:।

कृपया मिश्रो रमापति निर्याति

जब सिद्धावस्था में आता है उसका नाश नहीं होने पर भी

अपहृत नहीं है अतः मात्र क्रिया क्रियात्मक रूप

से रहती है।

१ कुन्तक के भी रसवक्र तर्क से यद्यपि भावात्मक

है। उसका विचार स्पष्ट होने के कारण उनके

तर्क नहीं थे। इसका होने से इस विषय के तर्क हैं।

अतः पाक भया।

२ विषय भेद है जैसे तर्क में आत्मक भया

१ प्रमाण के अपेक्षा में इसका अधिक कहते हैं।

इसका विशेष और तो विचार ...

गी है। ...

इसका भी ... नहीं है। ~~...~~

सनोरमजो कहते हैं जैसे वीर श्रृंगार शान्त और रौद्र ये चार

रस जाता रहता है। इतर पांच ये ... रहते हैं। तो

जो जैसा है उनमें ... विरोध ... आता है उसमें

और ... के ... में आते ... में जाता है

२ इसका ... से परिपूर्ण था इसका ... है

3

कान्तारमेव वनमातिम माश्रयेत

निर्विषधीरपि भवान्मतिमोहभीतेः।

न्यस्य प्रसह्य तु पदं पुरि मोहमय्यां

विद्वान्भवान्प्रकटये स्वमहेश्वरत्वं॥

श्यते

के वा रमापतिपदं बत हातुमीशा यन्मोहमय्यापि पुरी पुरतो विभाति।

ये स्युः पुनः स्फुरदपेतगुणौघा

नैतद्विशेषो नैजं न तिष्ठति।

में आत्मसमर्पण में भी आ जाता है। गांधी के अनुयायी इस बात
हो रहे हैं इसलिए [illegible] के उस नाटक [illegible] तो गया [illegible] कैसे
[illegible]गा।

१ [illegible] सवाल ये और रस्सा [illegible] अनुभाग ये करके हैं।
२ सर्व साधारण रूप से विचार हो रहा है [illegible]
[illegible] ही थी। सामान्य जनता के अन्तःकरण [illegible] प्रेस [illegible]
[illegible] भाव [illegible] [illegible] इस बात [illegible]
हमारे अन्तःकरण में आनन्द उन भावों [illegible] के अन्तःकरण [illegible] हैं।
२ रेलवाले [illegible] प्राणों को [illegible] हैं
चाहिए [illegible] [illegible] नहीं है [illegible] चाहिए
[illegible]

मता॥४॥ ॥अथ पूर्वभसमः॥

१०अतिवृद्धौ १	१०समवृद्धौ २	१०हीनवृद्धौ ३	१०अतिक्षये ४	१०समक्षये ५	१०अल्पक्षये ६	१०केवलक्षये ७
सौरीतिथि:५२।१० आर्य२।२३ लिप्ति१६पले८० इत्यमीवेधः५६	सौर५२।२५ आर्य२।२५ लिप्ति१२प॰६० ५६ योगः	सौरी५२।५३ आर्य२।२२ लि॰२प-४५ ५६ योगः	सौरी५४।१३ आर्य१।२२ लि॰५प॰२५ ५६ योगः	सौ ५३।४२ आर्य १।४७ लि॰ ६प॰३० ५६ योगः	सौ ५३।१६ आर्य२।१० लि॰७प-३५ ५६ योगः	सौ ५२।१३ आर्य२।११ लि॰८प॰४० ५६ योगः
१२अतिवृद्धौ १	१२समवृद्धौ २	१२हीनवृद्धौ ३	१२अतिक्षये ४	१२समक्षये ५	१२अल्पक्षये ६	१२केवलक्षये ७
सौरी५६।१५ ~~लिप्ति~~ आर्य २।२५ लिप्ति १६प॰८० साधनवृद्धादशीयो	सौरी५६।३० आर्य२।२१ लि॰१२।प॰६० ६० योगः	सौरी५६।५२ आर्य२।२२ लि॰१प ४५ ६० योगः	सौरी५[illegible]।४३ आर्य१।२२ लि॰५प-२५ ६० योगः	सौरी५७।४२ आर्य१।४७ लि॰६प३० ६० योगः	सौरी५७।१६ आर्य२।१० लि॰७।३५ ६० योगः	सौरी५७।१३ आर्य२।११ लि॰८प॰४० ६० योगः

६०गः शावरतिथीनाहर्वीलाणत्रे साधन१२ ॥अथ घटीपलनिर्णयचक्रम्

५

[illegible]

[illegible]

अथमाहेंद्रमुहूर्तलिख्यते ५

माहेंद्रं चित्रयोनिसं अमृतं कार्यशोभनं चक्रमनिषिद्धं च साधार-
णमग्नं शून्यं।।१।।

माघ फाल्गुन चैत्र वैशाख श्रावण भाद्रपद मास ६

रविवार		सोमवार		मंगळवार		बुधवार	
दिवस	रात्र	दिवस	रात्र	दिवस	रात्र	दिवस	रात्र
घ.	घ.	घ.	घ.	घ.	घ.	घ.	घ.
२ माहेंद्र	२ शून्य	४ अग्न·	२ चक्र	४ चक्र	२ अग्न·	४ अग्न·	२ शून्य
८ अमृत	२ माहेंद्र	८ चक्र	६ अमृत	२ शून्य	४ चक्र	६ चक्र	६ अग्न·
८ शून्य	४ अमृत	६ अग्न·	६ चक्र	६ अग्न·	२ शून्य	४ अग्न·	४ माहेंद्र
२ माहेंद्र	६ चक्र	६ चक्र	८ अग्न·	४ चक्र	६ अग्न·	२ शून्य	४ चक्र
१० चक्र	८ माहेंद्र	४ माहेंद्र	८ शून्य	२ शून्य	६ चक्र	४ चक्र	४ शून्य
३०	८ अमृत	२ शून्य	३०	४ अग्न·	४ अग्न·	४ माहेंद्र	१० अग्न·
	३०	३०		२ शून्य	४ चक्र	४ अग्न·	३०
				४ अग्न·	२ शून्य	२ शून्य	
				२ शून्य	३०	३०	
				३०			

गुरुवार		शुक्रवार		शनिवार	
[illegible]	रात्र	दिन	रात्र	दिन	रात्र
	घ.	घ.	घ.	घ.	घ.
[illegible]	१० चक्र	४ अग्न·	४ चक्र	४ शून्य	२ शून्य
[illegible]	४ शून्य	२ चक्र	४ अग्न·	४ चक्र	४ चक्र
[illegible]	४ चक्र	६ अग्न·	४ शून्य	४ शून्य	६ अग्न·
[illegible]	६ अग्न·	६ चक्र	२ माहेंद्र	८ अमृत	४ चक्र
[illegible]	६ शून्य·	४ अग्न·	६ चक्र	४ शून्य	४ अग्न·
	३०	४ शून्य	४ शून्य	४ अग्न·	२ चक्र
		४ अग्न·	४ शून्य	२ शून्य	४ अग्न·
			२ माहेंद्र	३०	४ शून्य
		३०	३०		३०

[illegible] कार्तिक मार्गशीर्ष पौष माघ ४

[रवि]वार		सोमवार		मंगळवार		बुधवार	
[illegible]	रा.	दि.	रा.	दि.	रा.	दि.	रा.
[illegible]	२ शून्य	४ अग्न·	६ चक्र	२ अग्न·	६ माहें·	२ अग्न·	२ चक्र
[illegible]	४ चक्र	४ शून्य	८ अग्न·	२ चक्र	२ अग्न·	४ माहेंद्र	२ अग्न·
[illegible]	४ अग्न·	६ अग्न·	८ चक्र	१० अग्न·	२ शून्य	२ अग्न·	४ चक्र
[illegible]	६ चक्र		२ अग्न·	६ चक्र	६ अग्न·	६ चक्र	१२ अग्न·
[illegible]	४ अग्न·	१६ चक्र	६ चक्र	६ शून्य	४ चक्र	६ अग्न·	२ चक्र
[illegible]	४ शून्य	३०	३०	४ चक्र	४ अग्न·	२ शून्य	४ शून्य
[illegible]	६ अग्न·			३०	४ शून्य	४ माहेंद्र	३०
					२ अग्न·	४ चक्र	
३०	३०				३०	३०	

गुरुवार		शुक्रवार		शनिवार	
दि.	रा.	दि.	रा.	दि.	रा.
घ.	घ.	घ.	घ.	घ.	घ.
[illegible] अग्न·	२ शून्य	२ अग्न·	२ चक्र	२ अग्न·	१० चक्र
[illegible] चक्र	८ अग्न·	२ चक्र	६ अग्न·	२ चक्र	४ शून्य
[illegible] शून्य	६ चक्र	६ अग्न·	६ चक्र	६ अग्न·	४ चक्र
[illegible] चक्र	८ अग्न·	६ चक्र	८ अग्न·	६ चक्र	४ अग्न·
[illegible] शून्य	२ शून्य	८ अग्न·	२ शून्य	८ अग्न·	२ अग्न·
[illegible] अग्न·	४ अग्न·	२ शून्य	६ अग्न·	२ शून्य	६ शून्य
[illegible] चक्र	३०	४ अग्न·	३०	४ अग्न·	३०
३०		३०		३०	

ज्येष्ठ · असाढ मास २

[रवि]वार		सोमवार		मंगलवार		बुधवार	
.	रा.	हि.	रा.	हि.	रा.	हि.	रा.
.	द.	प.अ	प.	प.	प.	प.	प.
[मु]न्य	२अम.	८ अम.	८चक्र	६अम.	२अम.	२मुन्य	१०अम.
[अ]म.	४मुन्य.	४अम.	८अम.	४मुन्य	४चक्र	४चक्र	२मुन्य
[च]क्र	४चक्र	६मुन्य	४मुन्य	६अम.	४मोहेंद्र	८अम.	४चक्र
[अ]म.	६अम.	८चक्र	४अम.	६चक्र	४मुन्य	६चक्र	४अम.
[च]क्र	८चक्र	४मुन्य	२मुन्य	२मोहेंद्र	२चक्र	८अम.	१०मुन्य
[मो]हेंद्र	६मुन्य		२मोहेंद्र	२अम.	६अम.	२मुन्य	३०
[मु]न्य			२मुन्य	४मुन्य	२मुन्य	३०	
३०	३०	३०	३०	३०	६चक्र		
					३०		

[गुरु]वार		शुक्रवार		शनिवार	
.	रा.	हि.	रा.	हि.	रा.
.	प.	द.	प.	प.	प.
[मो]हेंद्र	२मुन्य	२मुन्य	६अम.	२मोहेंद्र	२मुन्य
[मु]न्य	६अम.	२मोहेंद्र	२मुन्य	२मुन्य	२अम.
[च]क्र	२मुन्य	६चक्र	४चक्र	६चक्र	८चक्र
[मो]हेंद्र	६चक्र	२मोहेंद्र	६मुन्य	६मोहेंद्र	२मुन्य
[मु]न्य	२मुन्य	४मुन्य	६अम.	४मुन्य	४अम.
[च]क्र	६अम.	६अम.	२मुन्य	४चक्र	४मुन्य
[अ]म.	४मुन्य	६चक्र	४अम.	६अम.	६अम.
	२अम.	२मुन्य			२मुन्य
३०	३०	३०	३०	३०	३०

6

जोन्ताशोगोपराल: सुखंभर्वे भवेत्॥ लांगेद्वात्यन्ते
राज्यंगोराये शुक्रमुगमे॥ मंद: परांगोकन्दह:कलारोरा
ऊबंधने॥ रोगांके मरणं केतु इश्येतं महलक्षणे॥



श्री

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ नमा
॥ मि सद्गुरुं शांतं प्रत्यक्षं शिवरूपिणं ॥ शिरसा
॥ योगपीठस्थं मुक्तिकामार्थसिद्धये ॥ १ ॥
॥ आत्मतत्त्वाय स्वाहा ॥ विद्यातत्त्वाय स्वाहा ॥
॥ शिवतत्त्वाय स्वाहा ॥ मूलेन प्राणायामः ॥
॥ अस्य श्रीसीताराममहामंत्रस्य ॥ शिवऋ
॥ षये नमः शिरसि ॥ अनुष्टुप् छंदसे नमः
॥ मुखे ॥ श्रीसीतारामो देवतायै नमः हृदये ॥
॥ ॐ बीजाय नमः गुह्ये ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः
॥ श्रीं कीलकाय नमः सर्वांगे ॥ श्रीसीताराम
॥ प्रसादसिध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ न्या
॥ सः ॥ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ रीं तर्जनीभ्यां ॥
॥ रूं मध्यमाभ्यां ॥ रैं अनामिकाभ्यां ॥ रौं क
॥ निष्ठिकाभ्यां ॥ रः करतलकरपृष्ठाभ्यां ॥
॥ एवं हृदयादि ॥ रां हृदं ॥ रीं शिरः ॥ रूं शिखा
॥ यै वषट् ॥ रैं कवचाय हुं ॥ रौं नेत्रत्रयाय वौ
॥ षट् ॥ रः अस्त्राय फट् ॥ भूर्भुवस्वरोमिति दि
॥ ग्बंधः ॥ अथ ध्यानं ॥ कालांभोधरकांति
॥ कांतमनिशं वीरासनाध्यासितं मुद्रां ज्ञान
॥ मयीं दधानमपरं हस्तांबुजं जानुनि ॥ सी
॥ तां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राघ
॥ वं पश्यंतं मुकुटांगदादिसहितं कल्पोज्व
॥ लांगं भजे ॥ श्रीसीतारामचंद्राय नमः लं
॥ पृथिव्यात्मकं गंधं प्रतिकल्पयामि नमः ॥
॥ श्रीसीताराम० हं आकाशात्मकं पुष्पं अर्प
॥ यामि नमः ॥ श्रीसीताराम० यं वाय्वात्मकं धू
॥ पं आघ्रापयामि नमः ॥ श्रीसीतारामचंद्र० ॥
॥ रं तेजात्मकं दीपं दर्शयामि नमः ॥ श्रीसीता०
॥ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥ श्री
॥ सः सर्वात्मकं तांबूलादि सर्वराजोपचारा
॥ न् प्रतिकल्पयामि नमः ॥ माले मां विमरे
॥ माये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्व
॥ यि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ मालां
॥ गृहीत्वा ॥ जपं कुर्यात् ॥ मूलं ॥ श्रीॐ ह्रीं
॥ श्रीसीताराम प्रसीद प्रसीद स्वाहा १००
॥ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा सुखदा
॥ भव ॥ शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं ब
॥ लं सुखं ॥ ततः न्यासध्यानादि कुर्यात् ॥
॥ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं
॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥
॥ देवनाथ गुरो स्वामिन्देशिकस्वात्मनायक
॥ त्राहि त्राहि कृपासिंधो जपपूर्णं तरं कुरु ॥
॥ देवता दक्षिणकरे जपं निवेदयामि ॥

चित्पावनसमस्त (?) गणगोत्र

भारद्वाज गार्ग्यगोत्री कपिगोत्री जामदग्न्यगोत्री कौशिकगोत्री वासिष्ठगोत्री

गोरे जोशी काळे
वैद्य घोसाळ विध्वंस कुंटे गद्रे कारळ साठे
मनोहर घाणेकर करंदीकर वेडसे बर्वे खुले बोडस
मांजरेकर (?) दुर्वे लिमये भागवत आपटे कानीटकर कारखेकर
दुर्वे (?) खांबेटे मराठे वत्सगोत्री भाव्ये (?) सार (?)
देवरास (?) खांबेटे मराठे [illegible] अनाड़े (?) विष्णुवर्धनगोत्री
दुर्वे (?) अनेकर (?) खांबध्ये (?) गांधरेकर माडगावकर (?) [illegible] सोंडकर
सोवनी माहे माईदे कापरे (?) वांछंदे (?) मंडलीक दांडे (?)
लोंढे साने माहुरी (?) बाडस वैशंपायन (?) मोडक
रानडे वझे रटाटे जोशी हेबाळकर (?) नेहरे (?) सावरकर
देणे (?) गुळवणे आठवले गोरे सरदेसाई (?) किडमिडे मालखंडे
ओझी (?) माटे आठल्ये सवनी करंदीकर देव डोणकर
वाघुर्डे (?) ढमढेरे (?) भागवत १८ कोल्हे (?) हेबळे (?) ओळकर (?) कोपरकर
देव वैद्य वास्कगोत्री (?) कौंडिण्यगोत्री वर्तक विष्णुवर्धनगोत्री भाभे (?)
आचवल बेडेकर वहाळे (?) आगरी (?) खरे वैशंपायन वैद्य
आठवले गोरे भागवत वाळके (?) फणसे आपटे माडगांवकर विनोद (?)
१५ राहळकर (?) माडगांवकर पटवर्धन बामहे (?) भिडे वापट (?)
लेसकर १८ गोंठ (?) सहस्रबुद्धे गावडे (?)
 कोल्हटकर (?) पिंपरुटकर ओक
 भारु (?)
 रिवेकर (?)

शांडिल्यगोत्री
पथ्ये परचुरे भिडे
ताम्हणकर काळे (?) पणवळकर (?) काश्यपगोत्री
काळे राजवाडे सातार (?) भातु (?) सोमण (?) वझे (?)
ठकार (?) माईल राजवाडे कुलकर्णी (?) ठोसर काळवे (?) लागू
अंबेडकर मांगले (?) दिसबुड गोखले (?) पोंक्षे
धामणकर सहस्रबुद्धे शिधये भिडे उगले महाबळ
गुळगुळे उपासे जोशी जोग गोगटे
तिवे (?) कोने (?) शिपारे (?) केळकर बिवलकर साठे (?)
माटे दाबके गणपुले भाटे (?) आठल्ये पेंढे (?)
वाडगी (?) कानडे (?) कोल्हटे (?) जोग (?) लेले (?) वारघुरे (?)
डोंगरे निजसुरे (?) नवरे (?) खाडिलकर लवाटे फडके (?)
काचके (?) पालकर (?) डोंगरे (?) आगरे (?) काळे (?) वागळे (?)
जोशी गोरे (?) आभ्यंकर
सोमण पारणकर (?) पटवर्धन (?) कुसरे (?)
वामने (?) व्यास (?)

आगाशेनी
आठवले
चिपळूणकर
वितळे
माने
वांपकर
चांदकर
फडके
भाडभोके
भाडरेकर
आगटेकर

भारद्वाजाश्च गार्ग्याः कपिकुत्समिलिताजामदग्न्याश्च वत्साः॥
वाभ्रव्याः कौशिकास्तु भगवत्समयुता विष्णुवर्धानितुंसाः।
शाण्डिल्याः कौण्डिन्न्येयाः पुनरपि मिलिता शांडिल्या काश्यपेयाः
ज्ञेयाविद्वद्भिरेते परिणयसमये वर्जनीयाः सगोत्राः॥

वेललोऽयाचामं ज
अम्लोद्भवश्रीवृक्षमहादेवप्रियानघ॥ समं स्वत्वं च पूजार्थं तव प
गृह्णाम्यहं॥१॥

श्राद्धं कृत्वा परश्राद्धे यो भुंजीत स दुर्बलः। पतंति पितरस्तस्य लुप्तपिंडोदकक्रियाः। इति लघुहारीतस्मृतेः।

अथ पंचोपचारं ॥ लं आपात्म
स्नानं कल्पयामि ॥ लं पृथिव्या
त्मकं गंधं क० ॥ हं आकाशात्मकं
पुष्पं कल्प० ॥ यं वायव्यात्मकं धू
पं कल्प० ॥ रं वन्ह्यात्मकं दीपं क
ल्प० ॥ वं अमृत वासने अमृ
तं कल्पयामि ॥ अमृते अमृतो
द्भवे अमृतेश्वरी अमृत वर्ष
णीं अमृतं स्रावय स्रावय० ॥
सः सर्वमिनेसर्वोपि भावान्
कल्पयामि ॥ इति पंचोपचार॰
मूलं: योनि मुद्रा प्रदर्श्य:
ईदं न्यासः पंचोपचार

आत्मै सर्वदेवानां प्राहि शक्ति सुखदा भव ॥ कुंभ
कृष्णमे भद्रे पराबीज मंत्रं ॥ गुह्याति
गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥ सिद्धि
र्भवतु मे देवी त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥
अनेन कृत जप स्थानं ... इति तज्जपं ॥ ...
तिलकुश जल ... [illegible]
अथ भूमौ जपं कृत्वा ... [illegible]
[illegible]

श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः ॥

अस्य श्रीभुवनेश्वरी मंत्र

स्य ॥ प्रजापति ऋषिः ॥ गायत्री

छंदः ॥ श्रीभुवनेश्वरी देवता ॥

ॐ बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कील

कं श्रीभुवनेश्वरी देवता

प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः इत्या

दि षडंगन्यासं कृत्वा ॥ अथ

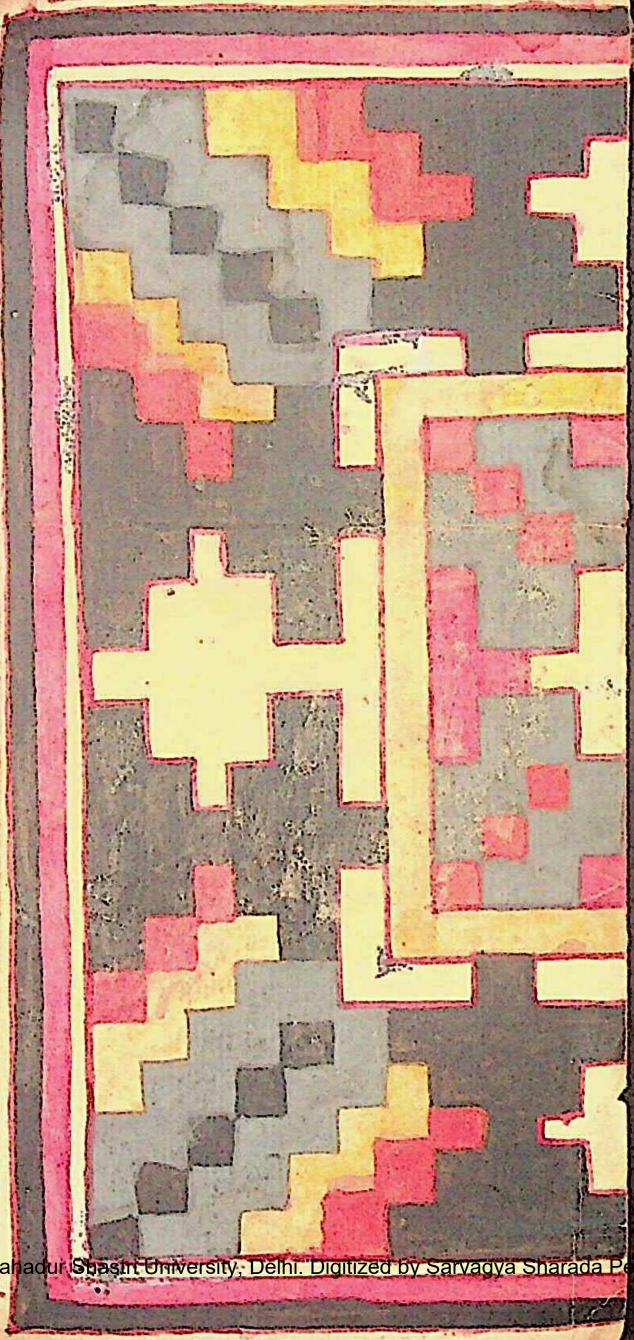
ध्यानं ॥ पाशांकुशाभय नीलो

त्पल पद्म हस्तां ॥ पीतांबरां क

नक भूषण भूषितांगीं ॥ भा

क्रोडे शोभित कलावृंत पद्मा

[illegible]





॥श्रीजयतितराम्॥

13

॥शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं
॥ममात्मश्रीताराभगवतीप्रीत्यर्थं पंचार्णतारा
॥मन्त्रस्य शतपंचलक्षसंख्याजपपुरश्चरणपंचां
॥गतसांगतासिद्धिप्रदं दशांशहवनसंख्यादि
॥गुणितं जपं अद्यारभ्य यथाकालेन करिष्ये
॥१०००००

॥शुभ० प्रदं शतांशतर्पणसंख्याद्विगुणितं जपं करिष्ये
॥~~अद्यारभ्य यथाकालेन करिष्ये~~ १००००
॥शुभ० प्रदं सहस्रांशमार्जनसंख्याद्विगुणितं
॥जपं करिष्ये १०००

॥शुभ० प्रदान् अयुतांशसंख्याकान्ब्राँह्मणा
॥न् यथाकालेन भोजयिष्ये ५०

अथवा
शुभ० प्रदं अयुतांशब्राँह्मणभोजनसंख्या
द्विगुणितं जपं करिष्ये १००
शुभ० प्रदं सुवासिनीत्रयब्राँह्मणपंचकं भोजयिष्ये

योऽभिसंसम्ध्योनरश्रुंगवः॥कलत्रपुत्रमित्रादिसुहृद्बंधुसमावृतः॥
श्रद्धाहीनोपियःकुर्यादन्यथानिष्फलंभवेत्॥वसतेभूतलेश्रीमा
न्दानधर्मरतःसदा॥पुत्रकीर्तिविपाप्नोत्यचिरंलक्ष्मीसमावृ
तः॥अनेनविधिनाकुर्वन्श्रीसूक्तस्यविधिस्फुटं॥इदंप्रत्य
यमेवेदंत्रिकालेवापियःपठेत्॥सोपिलक्ष्मीयुतोनात्रधीस
त्यंसत्यंनसंशयः॥ ॥अथयंत्रप्रवक्ष्यामिसर्वाभीष्टप्रदायकं॥
मुनिभिर्गदितंसत्यंवेदगौरीवनान्यथा॥षट्कोणंवसुपत्रंच ११

ह्रीं
अलक्ष्मीहारायभ्रमध्यस्थैःसुशोभनैः॥कुंकुमेनचाथसप्तम्यायशः
कीर्तिविवर्द्धये॥शतपत्रैर्जपाजातिकुसुमैस्त्रिमधुप्लुतैः॥अ
थाष्टम्यांचचैवबकुलस्यालक्ष्मिकांहारत्॥श्वेतैःतिलैःस
राज्यैश्चसाज्यैर्मौक्तिनरपत्रजैः॥लक्ष्मीप्रसादनार्थायनवम्या
पा२ म्यर्चंकुर्नेत्॥पद्मैर्मौक्तिकरजद्रव्यैःसर्वैर्मधुसितायुतैः॥चाद
शम्यापलेनकुंकुमेनपाटलिपुष्पकैः॥कदलीफलखाद्यैश्चसप्त

सौमांवरवर्द्धये॥एकादश्यांत्वचाचैवसर्वसंपत्समृद्धये॥ना

नारिकेलैश्चूतफलैर्द्राक्षाभिर्मधुसंयुतैः द्वादश्यामर्चयेच्छीमान्
ध्यानादिकसमृद्धये॥ व्रीहिभिश्च यवैस्तद्वद्गोधूमैश्च मधुप्लुतैः॥
त्रयोदश्यामर्चयेद्भक्त्या चतुर्दश्यां तथैव च॥ पंचदश्यामर्चयेच्चैव
पुत्रपौत्रसमृद्धये॥ देशग्राममपुत्राद्यैस्तथासन्नसमृद्धये॥
पक्वान्नैर्मधुरैश्चैव मधुत्रितयसंयुतैः॥ दध्नाक्षीरेण चाप्रो
त्तोलवंगैलासुपत्रिका॥ जटामांसी वीरणं च लोहवालस्तथै
व च॥ नवनीतं मातुलिंगं समस्तं सुमनोरमं॥ राज्यसाम्राज्य

संपत्तिप्राप्तबुद्धि पूर्वकं॥ कुर्नेत्समस्तस्कन्दस्तेन यथावच्छ्रद्धया
युतः॥ संपूर्णमानसो हृष्टो निद्रातंद्राविवर्जितः॥ नास्तिकादि
समुच्चारैः शद्वैरस्पष्टवान्नरः॥ सदा तुष्टः सदा पुष्टो सदा
प्रह्लादसंयुतः॥ अन्यथा न लभेत्सिद्धिः संशयात्मा विनाशय॥
सलभेत्सर्वसाम्राज्यसमृद्धिं सत्वरं नरः॥ निरीहो निर्विकारो
पि निराशीरपथाचकः॥ नित्यप्रदानशक्तिश्च नित्यतृप्तो ह्यलोलु
पः॥ श्रीसक्तस्य च मायाहि अपायैश्चापराजितः॥ भोगैर्नानावि

ॐ अस्य श्रीगंधर्वराजविश्वावसुमंत्रस्य। विश्वामित्र ऋ
षिः अनुष्टुप्छंदः श्रीगंध॰ ता ॐ बीजं स्वाहा शक्तिः
मम श्रीष्टकन्यार्थे जपे विनियोगः ॐ नमो भगवते ग॰
ॐ गंधर्वराज तर्जनीभ्यां॰ विश्वावसो॰ मम मभिल
षितां अनामि॰ कन्यां प्रयच्छ प्रयच्छ क॰ स्वाहा॰ करत
ल॰ एवं हृदयादि॥ ध्यायंतीक्षुरसांबुधौ र्घपतेरुच्चै
श्शृंति: काल्पितेक तारके प्रति निशं पाणि कमले कन्या

जस्रो:सेविते॥ गंधर्वाधिपति प्रसन्न वदनं विश्वा

वसौर्ग्यः पुमान्मंत्रीतस्य स्तुमेतनियतं कान्यानसौ
कांक्षितं ॥ एवं ध्यात्वा मानसैः संपूज्य ॥ गुह्याति
गुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥ गंधर्वराज
मंत्रेश त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥ इति शिवं ॥

स

८

॥ श्रीः ॥ परिस्तरण रम्भ अनिन ज्ञस्य यय परिहारार्थं यजमः स त्वं नश्चा आहुती होष्यामि ॥ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोव यासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ अग्नीवरुणाभ्या ॥ स त्वं नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ॥ अवयक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा ॥ अग्नी ॥ अस्मिन् कर्मणि बाहिर्ज्ञ अनिन ज्ञस्य यय परिहारार्थं सर्वप्रायश्चित्तं करिष्ये ॥ आप ॥

अस्मिन् कर्मणि ज्ञ क्षिज्ञा वीयाज्ञ दोषपरिहारार्थं इमं दाहुतीं होष्यामि ॥ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिश्च सत्यमित्त्वमया असि ॥ अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं स्वाहा ॥ अग्नये अयस इदं ॥ पुनरग्निश्चक्षुरदात् पुनरिन्द्रो बृहस्पतिः ॥ पुनर्मे अश्विना युवं चक्षुराधत्तमक्ष्योः स्वा ॥ मिंदव ॥ अस्मिन् क ॥ स्कन्नदस्कस्य पर्व ॥ प दूरिं ॥ आभिर्गीर्भिर्यदतो न ऊनमाप्यायय हरिवो वर्धमानः ॥ यदा स्तोतृभ्यो महि गोत्रा रुजासि भूयिष्ठभाजो अध ते स्याम स्वाहा ॥ अग्नये इ ॥ अस्मिन् कर्मणि बाहु नियम दोष ज्ञस्य यय परि ॥ र्थं इदं विष्णुस्त्र्यंबक माज्या हुतिं होष्यामि ॥ इदं विष्णु ॥ म ॥ क ॥ त्र्यंबकं ॥ म ॥ क ॥ देवेभ्य इदं ॥

16

[illegible]

[illegible]

This book belong

Benares



दाक्षिण्यंचजनेदयापरजने
शाठ्यंसदादुर्जनो प्रीतिःसा
धुजनेनयोनृपजनेविद्वज्जन
चार्जवं॥शौर्यंशत्रुजनेक्ष
माकुरुजनेनारीजनेधूर्तता
येचैवंपुरुषाःकलासुकुशला

स्तेष्वेवलोकस्थितिः१

यां चिंतयामि सततं मयि सा विरक्ता साप्यन्यमिच्छति जनं स जनो न्यसक्तः। अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च ॥ २ ॥

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पंडितः स श्रुतवान् गुणज्ञः। स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वे गुणाः कांचनम्

आश्रयंते ॥ ३

नियां॥ ६॥ विधिनिषेधांचिकडसणी॥ नवर्तेजयाच्याअंतःक ॥ग्रं॰१३॥
रणीं॥ पापपुण्यांचिकाहाणी॥ नेहींनेणती॥ ७॥ कर्मआणिकर्मफळें
नबाधतीकवणियेवेळे॥ तेसर्वांपासोनिसुटले॥ जीवन्मुक्त॥
८॥ बंधमोक्षाचिवार्ता॥ नाइकतीसर्वथा॥ कासेयाच्या
तीशाश्वता॥ अखंडिता सि॥ ९॥ जेमनापासावसुटलें॥ त ॥श्रीराम॥

फ० मू० ॥ श्रीगणेशायनमः॥ श्रीसरस्वत्यैनमः॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥ श्री ॥ग्रं० १३॥
॥५७॥ कृष्णपरमात्मनेनम॥ श्रीविठ्ठलेनमः॥ ऐसीपावोनियोगखु
णा॥ स्वानंदभोगिति परिपूर्ण॥ तयायोगियांना इछेशिण संसा
राचा॥१॥ झालेपरब्रह्मआपण॥ योगीसहजचिपरिपूर्ण॥ सदां
स्वानंदसंपन्न॥ ज्ञप्तिमात्र॥२॥ संकल्पआणिविकल्प॥ दोनिं ॥श्रीराम॥ ॥१॥
दिसतिअल्प॥ स्फुरणपावलेआमुप॥ ह्मणोनिया॥३॥ साधनें
असाधनेखुंटलें॥ करणेंअकरणेंमोडलें॥ आपणाविसा
लें॥ परब्रह्म॥४॥ नाहिंधारणाध्यान॥ नाहिंसमाधिआस
न॥ चुबकळतिआनंदघन॥ आपणामाजि॥५॥ भुवनत्रयीं
क्रिडता॥ स्वइछावर्तती॥ अखंडस्फुरेब्रह्मस्फूर्ति॥ ह्मणउ

ॐ ह्रीं क्लीं नदातव्यं नान्यथा शंकरोदितं ॥ ९ ॐ नमः शक्तिरूप
यत्र स्थगरहेतुनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ अनुभवेन सिद्धिः ॥ इति दत्तात्रेय
तंत्रे ईश्वरदत्तात्रेयसंवादे जन्मवंध्यादीनां पुत्रकारणं नाम अष्टा
दशः पटलः समाप्तः ॥ आश्वीनशुक्लनवम्यां इंदुवारे शाके १८१९
समाप्ता। भैरवबापूभटस्य पुस्तकं ॥

[illegible]

[illegible] वारे कृते योग्ये [illegible] कोन्क न हीं कुर्त ॥ १॥ गुहिल [illegible] वटमूलं [illegible]

वर्धयेत् [illegible] भूल्यां संयुतं भक्तं तिलकं कोन्क न श्यकम ॥ [illegible]

[illegible] रस [illegible] चित्तं न श्वा संयुक्त पुरय तो सर्व कोन्क नाशं कुर्त ॥ ३ ॥ [illegible]

मूलं तु [illegible] हरि [illegible] लयेत ॥ ललाटे तिलकं कृत्वा न हीं कुर्यात् [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]

[illegible] देवी [illegible] चार्या पुष्पं तु धारयेत ॥ तांबूले दत्तं [illegible] सर्व कोन्क [illegible] ॥

रोचना सह [illegible] तिलकं कोन्क न श्य कुर्त ॥ [illegible] मूलं ललाटे तिलकं [illegible]

[illegible] त्रियो [illegible] दृष्ट मात्रेण न श्य कुर्त [illegible] [illegible]

[illegible] ॥

येयाश्रीमणिकर्णिकासितकजस्नस्यानुलिंगेदयस्यासदांजलिरर्कभाशिष्टगुरुःशुक्लाद्भभाक्लोऽनिशम् ॥
कन्यावादयावार्थकीमुविपदाजस्यस्युःस्वीकृतकीवेणिस्तोदविमणुणाजिअगतीमुक्तिःप्रवालाध्यरा ॥१२॥
॥श्रीगणेशायनमः॥त्वत्तीरेमणिकर्णिकेहरिहरौसायुज्यमुक्तिप्रदौवादंतौ
कुरुतःपरस्परमुभौजंतोःप्रयाणोत्सवेमद्रूपोमनुजोयमस्तुहरिणाप्रोक्तः
शिवस्तत्क्षणेतन्मध्याद्भृगुलांछनोगरुडगःपीतांबरोनिर्गतः॥१॥इंद्रा
द्यास्त्रिदशाःपतंतिनियतंभोगक्षयेतेपुनर्जायंतेमनुजास्ततोपिपश
वःकीटाःपतंगादयःहेमातर्मणिकर्णिकेतवजलेमज्जंतिनिष्कल्मषाः
सायुज्येपिकिरीटकौस्तुभधरानारायणाःस्युर्नराः॥२॥काशीधन्य
तमाविमुक्तनगरीसालंकृतागंगयातत्रेयंमणिकर्णिकासुखकरीमुक्ति
र्हितत्किंकरीस्वर्लोकस्तुलितःसहैवविबुधैःकाश्यासमंब्रह्मणाकाशी
क्षोणितलेस्थितागुरुतरास्वर्गोलघुःखेगतः ३ गंगातीरमनुत्तमंहिस
कलंतत्रापिकाश्युत्तमातत्रेयंमणिकर्णिकोत्तमतमायत्रेश्वरोमुक्तिदःदे
वानामपिदुर्लभंस्थलमिदंपापौघनाशक्षमंपूर्वोपार्जितपुण्यपुंजगमकं

पुण्ये जनैः प्राप्यते ऽदुःखांभोधिनिमग्नजंतुनिवहास्तेषां कथं निष्कृतिर्ज्ञा
त्वा तद्धि विरिंचिना विरचिता वाराणसी शर्मदा लोकाः स्वर्गसुखैस्ततो ऽतिलघ
वो भोगांतपातप्रदाः काशी मुक्तिपुरी सदा शिवकरी धर्मार्थकामप्रदा ५
धर एको वेणुधरो धराधरधरः श्रीवत्सभूषाधरो यो ऽप्येकः किल शंकरो विष
धरो गंगाधरो माधवः ये मातर्मणिकर्णिके तव जले मज्जंति ते मानवा रुद्रा वा ह
रयो भवंति बहवस्तेषां बहुत्वं कथं ६ त्वत्तीरे मरणं तु मंगलकरं देवैरपि श्लाघ्यते शक्रस्तं
मनुजं सहस्रनयनैर्द्रष्टुं सदा तत्परः आयांतं सविता सहस्रकिरणैः प्रत्युद्गतो ऽभूत्स
दा पुण्यो ऽसौ वृषगोऽथवा गरुडगः किं मंदिरं यास्यति ७ मध्याह्ने मणिकर्णिकास्न
पनजं पुण्यं न वक्तुं क्षमः स्वीयैरब्दशतैश्चतुर्मुखधरो वेदार्थदीक्षागुरुः योगाभ्यासब
लेन चंद्रमुकुटस्तत्पुण्यपारंगतस्त्वत्तीरे प्रकरोति सुप्तपुरुषं नारायणं वा शिवं ८॥
रुद्रैः कोटिशतैः स्वपापनिधनं यज्ञाश्वमेधैः फलं तत्सर्वं मणिकर्णिकास्नपनजे
पुण्ये प्रविष्टं भवेत् स्नात्वा स्तोत्रमिदं नरः पठति चेत्संसारपाथोनिधिं तीर्त्वा पल्व
लवत्प्रयाति सदनं ... मणिकर्णिका

श्री प्रात्यर्थे मम शरीरे उत्पन्न उत्पत्स्यमान कफ वात पित्त ज्वे
रानिद्रा कष्ट जारण मारण उच्चाटनो भूत शाकिनी डाकिनी
शान्त्यादि विविध कृत पीडा परिहारार्थं सद्यः आरोग्यावै
श्यर्थं श्री हनुमत् प्रीत्यर्थं यथावकाशेन त्रिलघुरुद्राभिषे
क्यं कर्म करिष्ये। सप्तमाल त्रिचौकिसना भार सिंह निपा
लादि नामे लज्जान्य कृत विविध पीडा

धन्यादि डायो

रामसं मारुती बड़ अघोराणां स्वयं सिंहासन कसम

भीम ...

श्रीगणेशायनमः [illegible] णपतयेनमः॥

यानंतरतो येउनकाय [illegible]

ॐ क्रौं ह्रौं स्त्रीं क्रां क्रीं क्रूं हइनुमतेनमः

श्रीगणेशायनमः॥

ज्यो॰
१

श्रीगणेशाय नमः। श्रीकृष्णाय नमः। अथ स्त्रीलक्षणानि
कथ्यते। पद्मिनी चित्रिणी चैव शंखिनी हस्तिनी तथा प्रत्येकं
चतुस्त्रीणां व्याख्यानं जातिक्रमं। अथ पद्मिनीलक्षणं
संपूर्णेंदुमुखी विलोलनयना पीनस्तनी दक्षिणा मृद्वंगी सु
गंधयुक्त...वदना शुभ्रा नाथधृ गौरद्युतिः। अल्पाहाररता वि
लासकुशला कामं स्वयूक्स्वना लज्जालु गुरुदेवपूजनरता सा
नायकाप-॥१॥ रक्तौष्ठी विलनयना गुरुपीनपयोधरा वडंगु
लिभ्रगायाचपद्मगंधा हि पद्मिनी॥ ॥ चित्रिणि श्यामा मा न तनुखी
कुरंगनयना क्षामोदरी चलत्कटाक्षा संगीतागमवेदिनी चरलमूलं
गस्तना शिल्पिनी। वा आल्पा परला मनंगजाति भाद्यां मयूरस्वना
८

अथस्मरदीपिकाप्रा॰

श्री ॥

23

श्रीगणेशाय नमः। हरिः ओम्। अस्य श्रीखड्गमाला मंत्रमंत्रस्य। उपस्थेंद्रियाधिष्ठायिवरुणादित्य ऋषिः। गायत्री छंदः। कामेश्वरी ललिता महाभट्टारिका देवता। कं ४ बीजं ५ शक्तिः। ह २ कीलकं। खड्गमाला प्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः। मूलेन्यासः। ध्यानं। स्वदेहा द्रूताभिर्घृणिभिररुणिमा आभिर भितो निषेवे नियेहा महमिति सदा भावयति यः॥ क्रिमा अर्थं तस्य त्रिनय महमिति सदा भावयतिनीरा नसेमृ छिन्नणयतो महासंवर्तोग्निर्विरचयतिनीरा नसम्पृ छिन्नणयतो ... ॥ हृदयदे जनविधिं। ऐं क्लीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुंदरि॥ हृदयदेवि। शिरोदेवि। शिखादेवि। कवचदेवि। नेत्रदेवि। अस्त्रदेवि। कामेश्वरि। भगमालिनि। नित्यक्लिन्ने।

५

कोष्ठिका १ लोध्र एतानि समभागानि कृत्वा मधुना सह यो
निलेपनेन भगसंकोचनं स्थूललिंगकरणं कुष्ठ गोरख
रपान वनिआया २ वच ४ अश्वगंध ५ गजपिप्पली ए
तानि समभागानि कृत्वा पिष्ट्वा महिषीनवनीतेन लिंगले
पनं कुर्यात् स्थूलत्वं दीर्घता च भवति घिला दीर्घ चुनि
नारी संतुष्टा लेपेनापि यते नस्मादीर्घचुनिं कृत्वा रमते बु
द्धिमाकर: इति स्मरदीपिका समाप्त: श्री रतिकामाय
नम: ॥ शके १७५४ श्रावण शुद्ध २ भिमवार लिखितं जना
र्दनभट्ट गडबोले या सेकस्यार्थ रसिक मानवार्थ ॥ ९५
श्री संगमनाथ र्तुये नम: ॥ प ॥ २ ॥ ३ ॥ १५ ॥ ९० ॥ ...

णोयदा हृदये दाहस्तृष्णा वंचोर्ध्वीला सकोमल: ॥ १४ ॥ विद्रुली
कस्य योनारी क्षिप्त्वा लिंगं वलं गे। यत्नात्तनो रमेत्कामी सर्वं
जःपशुसंज्ञिकः ॥ १५ ॥ कामशास्त्रं भविज्ञस्य रमते यो नरः स्त्रियं।
यथा गोगधा नस्ते नरपो रति भयान्तु यात ॥ १६ ॥ औषधप्रकर्णं
गजपिप्पलि १ अश्वगंध २ कुटजच ३ एतानि पूर्णं विताविसले
नपिष्टा महिषी नवनीतेन सह स्नान मर्दनं कुर्यात्। तेन स्तनम्
र्धं भवति। अन्यच्च। तृष्णा जिरा १ धान्य २ प्रियंगु ३ च च
न महिषी धृत नाभि कुट हरिद्रा अश्वगंधो एतानि घृतेन कठोर
स्तन कुर्वतें पयपिष्टा ह्लेमस्स तनारी यालो पिबेत् तेन
स्तनयुगलं तस्मात् संकोचनं कोक्रस्या बीज तिलो

४

धःपादेसोधणाः ६ पदमेकंहृदिन्यस्य द्वितीयं स्कंधसंस्थितं
कामोधःस्थाप्य रमेत्कामी बंधःसोकपः ७ संप्रसार्य पदेना
पार्श्वितैः शेषेणकेपोकुक्कः जग किंचित्समानेऽस्य रमतेसं
पुटोहिसः ८ स्त्रीपादेकर्णगो कृत्वा स्वयंभ्रमित्स्वजानुकः
आनंतसा रमते कामी ऊर्ध्वस्यापूर्वसंपुटः ९ अंबाद्वयं स्कंधेहि
कृत्वा मध्येयोषिद्वयं कामी धृत्वा रमेत्कामी बंधस्तान
रतिस्मृतः १० नारीपदद्वयं कामी धृत्वा कंठे निराकुलः
कराभ्यां च कुचौ धृत्वा बंधो भेरतिसुंदरः ११ कृत्वा मध्ये
पदे अंघ्रिपद्यं कृत्वा शिरःस्थितं सद्दृढं कामयेत्कामी स्वाव
कःअर्कदीप्तः १२ नार्याङकद्वयं धृत्वा कराभ्यां पीडयेत्कुचौ रमेद्
बंधस्याभागपाशकः १३ एकंगोपरि विपरीत भ्रमित्स्वकूरु

तोनभयःकामी २

४

स्मरचक्रः ॥१२॥ नागपाशः ॥१३॥ पद्मबंधः ॥१४॥ नीलास· १५
ऊर्ध्वसंपुटः ॥१६॥ षोडशस्त्रे बांधः क्रमात् निकथ्यंते ॥ स्कंदयो
श्चरणौ धृत्वा क्षिप्त्वा लिंगं भगे दृढं ॥ कामयेत्कामुकः य
स्मात्स्मर्यंकाकपदो मतः ॥१॥ पादमेकं करे धृत्वा द्वितीयं स्कं
धसंस्थितं स्वसंस्थितः ॥ नारीं च कामयेत्कामी बंधस्ता
द्विपदातकः ॥२॥ ऊरौ मेढ्रापादे न्यस्य योषिद् दूरनरो यदि ॥ आ
वांचलाधारनेत्कामी बंधो नागरको मतः ॥३॥ ऊर्ध्वे धृत्वाभुजा
दोर्भ्यां गाढमालिंग्य सुंदरीं ॥ कामयेद्विधिवत्कामी बंधः के
ऊरस्संज्ञकः ॥४॥ हृदि योषित्पदं दत्त्वा कराभ्यां धारयेत्कुचौ ॥
पश्चात् ताडयेद्योनिं बंधो हरिणपाशकः ॥५॥ पादौ नार्याः स्व
हस्ताभ्यां धारयेत् कंठदेशे तत्रार्पितां नरः कामी सर्वं

ताडनं एक कक्षानखक्षतदानं हस्तीनखदानं वामह-
स्तेन कंठेनखदानं चतु नेत्रचुंबनं अमावष्ठ अंशमर्दनं
मुखापद्मोनिम्यास्त्वाशिखाधोकामः १ केशकर्षणं २
ललाटचुं ३ नासिकाचुं ४ नेत्रचुं ५ अधरपानं
६ जिह्वाग्रपानं ७ कंठेनख ८ कपोलचुंबनं ९
केशग्राहनखक्षत १० कुचमर्दनं ११ नाभिमर्दन
खक्ष १२ भगमर्दनं १३ नितंबन १४ जंघामर्द
१५ चरणमर्द वामेदक्षिणे कक्षमध्ये आलिंगादयो
हेव अथबंधलक्ष तत्रशोडषबंधाः काकपद विपरी
त नागरक रतिपाश ४ केसर ५ गोविलोचन ६ कुप
... १० ... ११

[illegible]

निस्तुःश्रुभाविभद्र ॥ १ ॥ चंद्रलेखेंदुद्वितीयसंख्यतिथयस्था
[illegible] नानलिंगन्यासतेपौर्ण्डस्थास्परसाथनास्करक्षेपोप्रेमांतये
चिकिणी ॥ कर्णोमैकेंगणेशवांभुतिथयःस्तुःशांरविनीभीत
य शेषास्तुःसुरतोसंचपुष्करीणोनावीनयेस्मीतथे ॥ १ ॥ अथ
कामचलनं ॥ पादजंघकशीर्षिषुसानेभ्रंककमलेभुतो नवव
भागमदात्तथंभगेनच्छोचमर्दनं ॥ १ ॥ हृदयंपाणिनादस्याद्वे
नाधवपीडनं गंडनेत्रेललाटेचचुंबनंकामुकेरिह ॥ २ ॥ दक्षे
नेनकामाहिचत्तभांडभिवाग्निना ॥ कामयत्सवः ॥ स्त्रसपक्षे
प्रतिपदिवामचरणांगुष्ठमर्दनं ॥ १ ॥ द्विती-वामचरणो ॥ तृती
जानुमर्दनं ॥ चतु-जंघामर्द- ॥ पंच-नितंब- ॥ षष्ठे भगनख- ॥ स
प्त-नाभौनख- ॥ अष्ट-नखक्ष- ॥ नव-कुचमर्दनं ॥ दश-हृदय

शशो मृगो वृषभोऽश्वः जातिस्तु समुदाहृतं कथयामि क्र
मात्तेषां प्रत्येकं जातिलक्षणं ॥ शशोऽतिगौरपक्ष्मै
न सदा नादिरतप्रियः षडंगुलशरीरस्तु धीमानस्तु श ॥ २ ॥
कोमलः ॥ १ ॥ स्वल्पबाहुः स्निग्धकर्मैव सत्यभाषी प्रियंवदः अ
ष्टांगुलशरीरस्तु मृगस्तु कोमलः ॥ २ ॥ उपकारी परोपि
स्त्रीविषधे भोगी तथा ॥ दशांगुलशरीरस्तु धीमानस्तु वृष
भो मतः ॥ ३ ॥ लंपटः कृपणश्चैव मिथ्यावादी च निर्भयः द्वा
दशांगुललिंगेषु स जातो पुरुषोऽश्वः ॥ ४ ॥ अथ भगलक्षणं
कूर्मपृष्ठगजस्कंधपद्मनाभं सदा भगं निरोमं नातिनीचं स्तीर्णं
शुभान्येव भगानि षट् ॥ १ ॥ अथ श्लीपलक्षणं ॥ नातिदीर्घं
नातिकृशं ... ॥ ... लिंगं

२ कंदर्पस्थानमध्ये ... नाभिः शुभविवरं ...
गातः ॥ २

ष्ठे काम्बाधुविशेस्वेरे अणांबिनी चित्रोपमा चित्रिणी ४
लीलावती मासंगधा बिंबोष्ठि सस्मितानना पीनवक्त्रा
रुचिः कांतिचित्रिंन्यष्टांगुला भवेत् ५ दीर्घबाहु दीर्घजं
घा दीर्घा दीर्घशिरोरुहा श्यारगंधा पूर्णनाभिः शंखिनी
स्याद्दशांगुला ६ हस्तिनी पीनस्तनी लघुर्भगांगुष्ठगति
मोटा नरस्कंधरा स्थोकापिंगलकुंतला एधुकुचा लस्यादि
हीनामदा थिंबोष्ठी च कुभाग्यभोजनरुचिः कष्टेन साध्या
रतौ गौरांगी कादिदानगंधवदना सेयं महाहस्तिनी ७
कुचा सौदंभिनी स्थूलावहुरोमा निराकुला हस्तिनी स्याद्
जंतुध्वजमाणद्वादशांगुला ८ चतुर्विध...

॥धृष्णोजनोनां॥अदोसूहरस्यवेदः॥इंद्रयत्तेअ
॥स्तिवाजोविप्रेभिःसनित्वः॥अस्माभिःसुतंसनुहि॥
॥सद्योजुवस्तेवाजाअस्मभ्यंविश्वश्चंद्राः॥वशैश्चम
॥क्षूजरंते॥२॥सूक्तसमाप्तः॥छ॥

॥श्रीगणेशायनमः॥हरिःओम्॥ ॥आतूनइंद्रक्षुमं
॥तंचित्रंग्राभंसंगृभाय॥महाहस्तीदक्षिणेन॥विद्माहि
॥त्वातुविकूर्मिंतुविदेष्णंतुवीमघं॥तुविमात्रमवोभिः॥
॥नहित्वाशूरदेवानमर्तासोदित्संतं॥भीमन्नगांवारयंते॥
॥एतोन्विंद्रंस्तवामेशानंवस्वःस्वराजं॥नराधसामर्धिष
॥न्नः॥प्रस्तोषदुपगासिषच्छ्रवत्सामगीयमानं॥अभि
॥राधसाजुगुरत्॥१॥आनोभरदक्षिणेनाभिसव्येनप्र
॥मृश॥इंद्रमानोवसोर्निर्भाक्॥उपक्रमस्वाभरधृषता

मंगल ७ मं हृदयाय नमः ॥ हृदयं पू० ॥ मीं शिरसे स्वाहा ॥ शिरः
पू० ॥ मूं शिखायै वषट् ॥ शिखां पू० ॥ मैं कवचाय हुं ॥ क
वचं पू० ॥ मौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ नेत्राणि पू० ॥ मः अ
स्त्राय फट् ॥ अस्त्रं पू० ॥ पुनः कोविदः इति कोणेषु अ
धासरन्नामभिः पूजयेत् यथा ॥ ॐ मं मंगलाय नमः ॥
ॐ भूं भूमिपुत्राय नमः ॥ ॐ लोहितकाय इति नाम
भिः संपूज्य ॥ उपरि तेन त्रिकोणकोणेषु ॥ ॐ वं वक्राय भौम
नमः ॥ ॐ अं आराय ॥ ॐ भं भूमिजाय ॥ इति संपूज्य ७

30

॥ पंचसाष्टदलेषु स्वागमदलाग्रस्थापयेद्दिक्षु ब्राह्म्या
द्यष्टमातॄः संपूजयेत् ॥ ॐ ब्राह्म्यै नमः ॥ ॐ माहेश्व
र्यै ॥ ॐ कौमार्यै ॥ ॐ वैष्णव्यै ॥ ॐ वाराह्यै ॥ ॐ इन्द्रा
ण्यै ॥ ॐ चामुण्डायै ॥ ॐ महालक्ष्म्यै ॥ ततो बहिः ॥ प्रा
च्यादि दिक्षु ॥ दिक्पालान् लोकपालान् वज्राद्यायुधा
श्च पूजयेत् ॥ ॐ लं इन्द्राय ॥ ॐ रं अग्नये ॥ ॐ यं य
माय ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये ॥ ॐ वं वरुणाय ॥ ॐ यं वायवे ॥

॥अंगारकायन॰नैवेद्यं॥ॐ यमाय॰आचमनीयं
ॐ अग्निर्मूर्धा॰अंगारकाय॰सर्वरोगापहारकाः॰
तांबूलं॰॥ॐ अग्निर्मूर्धा॰अंगारका॰दक्षिणा॥
दक्षिणां॰ॐ अग्निर्मूर्धा॰अंगारकाय॰वृक्षफलं
नमः॥फलं॥ॐ अग्निर्मूर्धा॰अंगारकाय॰सर्वकाम
फलप्रदा॰नीरांजनदीपं॥ॐ अग्निर्मूर्धा॰अंगार
काय॥श्रीमंगलायनमः॥मंत्रपुष्पं॥इतितंत्रं॥

नानामन्त्रपुनःपुनः॥ नमस्कारं यथाशक्ति॥

मंगल ७ ॐ हृदयाय नमः। हृदयं पू०। ॐ शिरसे स्वाहा। शिरः
पू०। ॐ शिखायै वषट्। शिखां पू०। ॐ कवचाय हुं। क
वचं पू०। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्राणि पू०। ॐ अ
स्त्राय फट्। अस्त्रं पू०। पुनरेकविंशतिकोणेषु अ
घासुरनामभिः पूजयेत् यथा। ॐ मङ्गलाय नमः।
ॐ भूमिपुत्राय नमः। ॐ इत्याद्येकविंशतिनाम
भिः संपूज्य। उपरि तेन त्रिकोणकोणेषु। ॐ वक्राय भौम ७
[illegible]
नमः। ॐ आराय। ॐ भू [illegible]

॥ येन सा पूर्वकेषु स्वाग्रदलाग्रतः स्थाप्यादिस ब्राह्म्या
द्यष्टमातॄः संपूजयेत् ॥ ॐ ब्राह्म्यै नमः ॥ ॐ माहेश्व
र्यै ॥ ॐ कौमार्यै ॥ ॐ वैष्णव्यै ॥ ॐ वाराह्यै ॥ ॐ इंद्रा
ण्यै ॥ ॐ चामुंडायै ॥ ॐ महालक्ष्म्यै ॥ इति ॥ प्रा
च्यादिदिक्षु ॥ दिक्पालांल्लोकपालान्वज्राद्यायुधा
श्च पूजयेत् ॥ ॐ लं इंद्राय ॥ ॐ रं अग्नये ॥ ॐ यं य
माय ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये ॥ ॐ वं वरुणाय ॥ ॐ यं वायवे ॥

मंगल ॐ सं सोमाय ।। ॐ ईशानायनमः ।। ॐ वं वज्रा०
८ ॐ शां शक्तये० ॐ दं दंडा० ॐ खं खड्गा० ॐ पं पाशा
य० ॐ अंकुशा० ॐ गं गदायै० ॐ त्रिं त्रिशूला० ।
ईं ईशानभ्यो ।। ॐ अनंतेभ्यः ।। निर्ऋतिभ्यो
भ्यो ।। ॐ अनंतायनमः ।। इतिसंपूज्य ।। पुनः ।। अ
ग्निर्मूर्द्धा ।। अंगारकाय० श्रीमंगला० धूपं ।। अग्निर्मू
अंगारकाय० मंगला० दीपं ।। ॐ अग्निर्मू० अंगारा० भौ ८

।। श्रीमंगलायनमः ।।

गो॰ भूमा॰ नं मत्रनै वेद्यं॥ ॐ अग्निर्मूर्धा॰ अंगारका
य दि॰॥ प्रिये जातद्वैकविंशतितंतुभिरेकावर्ति
रेवमेकविंशति दीपदीपमालाकार्या॥ तत॥ अ
ग्निर्मूर्धा॰॥ अंगारकाय॰ श्रीमंग लावर्ता वूल॰॥
ॐ अग्निर्मूर्धा॰ अंगारका॰ श्रीमंगल॰ दक्षिणा॰
ॐ अग्निर्मूर्धा॰ अंगारका॰ श्रीमंगल॰ मंत्रपुष्प॥
॥ अर्घ्यदानं कुर्यात्॥ यथा॥ जलपूर्णताम्रपात्रेगं
धपुष्पाक्षताभिस्ताफलानि धायमंत्रमभ्यामाया

५

मंगल र्घ्यं निवेदयेत्॥ भौमाय॰ इदमर्घ्यं स॰॥ ॐ भूमिपुत्र
९ महातेजः स्वेदोद्भव पिनाकिनः॥ सुतार्थी त्वां प्रपन्नस्त्वां
गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥ भौमाय॰ इदमर्घ्यं॥ रक्तप्र
वालसंकाश जपाकुसुमसंनिभ॥ महीसुत महा
बाहो गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥ श्री भौमाय नमः॥
इदमर्घ्यं स॰॥ ॥ एकविंशतिनामभिरेकविंशत्यु भौम
र्घ्यदानं साष्टांगैरेकविंशतिनमस्कारैरेकविंशति ९

प्रदक्षिणाश्च कार्यास्तैरेव नामभिः ॥ अर्घ्यदानाद्येन
कर्मणा भगवान्भौमः प्रीयतां ॥ न नमस्कारान्ग्रा २३ ॥
प्रदक्षिणामंत्रः ॥ रां भों ह्रौं लां इंद्र दूतम्मेदिनीगर्भसंभ
वा अंगारक महाकाय लोहितांग नमोस्तु ते ॥ २४ ॥ इति प्र
दक्षिणान्ते समर्पयामि ॥ ततः मूलेन आपोनामस्य कराङ्ग
न्यासं कृत्वा मूलमंत्राष्टोत्तरसहस्रं जपेत् ॥ जपं तं समर्पये
त् ॥ ३० ॥ अस्य श्री भौममंत्रस्य विरूप ऋषिः गायत्री छं
दः ॥ भौमो देवता [illegible]

भौम गायत्रीछंदसेनमः॥मुखे॥ भौमयदेवतायनमः॥हृदये॥
१० ॥ॐ अंगुष्ठाभ्यां॥ॐ ह्रांतर्जनीभ्यां॥ॐ ह्रूंमध्यमाभ्यां॥
ॐ सः अनामिकाभ्यां॥ॐ स्वं कनिष्ठिकाभ्यां॥ॐ स्वः
करतलकरपृष्ठा॥एवंहृदयादि॥ॐ हृदया॥ॐ ह्रां शि
रसेस्वाहा॥ॐ ह्रूं शिखायैवषट्॥ॐ सः कवचायहुं॥ॐ
स्वं नेत्रत्रयायवौषट्॥ॐ॥स्वः अस्त्रायफट्॥ध्यानं॥ज
पाभंक्षितिवस्त्रंहस्तपद्मेगदाशूलशक्तीर्वरं धारयंतं॥ भौम
[illegible]कं समीडे॥॥ १०

अथमंत्रः॥ ॐ ह्रां हंसः खं खः॥ मूलमंत्रोयंषड्वर्णः॥ तारो
वियद्दीर्घबिंदुयुक्तं चंद्रांकितं पुनः॥ भृगुर्विसर्गी चंडीशो
कमाद्यात्रीवांसगिरौ॥ षड्वर्णो मनुराख्यातो भीष्टदायी
कृणांपरः॥ रसलक्षं जपेद्धोमः समिद्भिः खदिरस्य तु॥
जपं समर्पयेत्॥ भौमं नमाय च्छष्टोत्तरशतं जपेत्॥ ॐ अंगा
रकाय विद्महे॥ तन्नो भौमः॥ अंगारकगायत्र्येषा नरत्ना
[illegible]

मंगल नः॥ खदिरांगारेण रेखात्रयं कृत्वा वामपादांगुष्ठेन ताः
११ प्रमृज्या॥ तत्र मंत्रो॥ दुःखदौर्भाग्यनाशाय पुत्रसंतानहे
तवे॥ कृतरेखात्रयं वामपादेनैतत्प्रमार्ज्म्यहं॥ ऋणदुःख
विनाशाय मनोभीष्टार्थसिद्धये॥ मार्जयाम्यसितारेखा
स्तिस्रो जन्मसमुद्भवाः॥ ऋणरेखा मार्जनैर्वैदिको मं
त्रः॥ ॐ॥ अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिंस्तृतीये लो औम
के अनृणा स्याम॥ ये देवयाना उत पितृयाणा सर्वान्पथो ११

पत्र ७
गणानां त्वा शौनको गृत्समदो ऋषिर्जगती
वराकृति आद्यहोमे॰ गणानां त्वा॰ स्वाहा ॥
पत्र १२ दर्व्या सुपर्णी यंउत्तरा ह्रोराविष्टक
स्विष्टकृतं द्विरभिघारयति ॥
पत्र १८ अस्मिन्कर्मणि मक्षिकादी मधु पातदो
षपरिहारार्थं होमं दाहुतीहोष्यामि ।
पत्र आत्मनोग्निंदा भूदग्निसत्युरनराहा
ओंतवेदा विचर्षणिरग्नि॰ मिदवे तेनय॰
पुनरग्निश्चक्षुरदात्पुनरिंद्रो बृहस्पति
पुनर्मेअश्विनायुवं चक्षुरादत्तमक्ष्यो॰ स्वा
मिं दवते ग॰ अस्मिन्क॰ स्वराक्षरवर्ण
त्व परिहारार्थं आभिर्गीर्भिरिति॰ को॰
आहुतिं होष्यामि ॥ आभिर्गीर्भिर्यदतोन
ऊनमाप्यायहरिवोवर्द्धमानः ॥ यदा स्तो
तृभ्यो महिगोत्रारुजासीभूयिष्ठभाजो
अधतेस्याम स्वाहा । अग्नयइं॰ अस्मि॰
कर्म निषमदोष प्रत्यवायप॰ यं इदं विष्णुस्त्यं
बकंभाज्याहुतिं होष्यामि॰ इदं विष्णु॰ स्वाहा
। त्र्यंबकं॰ स्वाहा
॥ अस्मिन्कर्मणि परिस्तरणदग्धजनितप्रत्यवायप
॥ रिहारार्थं त्वंनः सत्वं नइत्याज्याहुतीहोष्यामि ॥ ॐ
त्वंनो अग्ने वरुणस्य॰ त्रिसीद्धां ॥ यजिष्ठो वह्नि॰ मुःच
मस्वाहा ॥ अग्निव॰ ॥ सत्वंनो अग्ने॰ ...
...वरुण॰ सुहवोनएधि॰ स्वा॰
...ह अग्निवरुणा॰

...मे र॰ ८ ... गहि... न्च स्याबरीष: सिंधुद्
...आगः... मि म न्म्यानं माडो॰
समुद्रज्येष्ठा इति चतसृणां सिद्धा आ पारि
मं नस्त्रा॰ समुद्रज्येष्ठा॰ ऋ॰ ७ ४
एतो निंद्रमिति चतसृणां तिरश्चीरां अंगि
मंत्र॰ एतो॰ ऋ॰ ७ ३
नरत्सइति वर्गस्यावत्सार: सोम: पवमानो
गायत्री। मंत्र॰ नरत्स मंदी॰ ऋ॰ ७ ४
त्रिभिष्ट्वमिति वर्गस्य शतं वैखानसा:
सोम: पवमा॰ मंत्र प्रथमाति स्रश्च स्रो गा
यत्र्या द्वितीया षष्ठी सप्तम्यनुष्टुभो पंच
मी विराट् मंत्र॰ त्रिभिष्ट्वमि॰ ऋ॰ ८
मं मेगं गेसिं धुक्षि मैयमे थ्यो गंगादि॰
थो जगती १ऽदक्ष मा लोऽनेवि॰ इमंमे
पत्र २८ सप्त ऋषय: शुभा: श्रेष्ठा: सर्वेषां
शुभप्रदा: सर्वेषां पंचपो हं ... नोज्ञा
कृतं ॥ इति प्रार्थ्य ॥ विश्वे मानो॰ ऋ॰ क विस
कश्यप॰ त॰ अत्रिं॰ भरद्वा॰ विश्वा॰ गौ॰ जम॰
वसि॰ अरुं॰
...अस्मिन् कर्मणि ... यदस्य जनितप्रत्यवाय पा
...रार्थं सर्वप्रायश्चित्तं करिष्ये॰ ...
...गायत्र्या ...

श्री

यमंतर्पणयमदीपकर्तावें

॥ आचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसं
॥ कीर्त्य॰ श्रीयमप्रीत्यर्थं यमादित
॥ र्पणंकरिष्ये ॥ यमायनमः ॥ यमंतर्प
॥ यामी ॥ धर्मराजायनमः ॥ धर्मंत॰ ॥
॥ मृत्यवेनमः ॥ मृत्युंत॰ ॥ अंतका
॥ यनमः ॥ अंतकंत॰ ॥ वैवस्वतायन
॥ मः ॥ वैवस्वतंत॰ ॥ कालायनमः ॥ का
॥ लंतः ॥ सर्वभूतक्षयायनमः ॥ सर्व
॥ भूतक्षयंतः ॥ औदुंबरायनमः ॥
॥ औदुंबरंतः ॥ दध्नायनमः ॥ दध्नंत
॥ नीलायनमः ॥ नीलंत॰ ॥ परमेष्ठि
॥ नमः ॥ परमेष्ठिनंत॰ ॥ वृकोदरायनमः
॥ वृकोदरंत॰ ॥ चित्रायनमः ॥ चित्रं
॥ त॰ ॥ चित्रगुप्तायनमः ॥ चित्रगुप्तं
॥ त॰ ॥ १४ ॥ यमोनिहंताःपितृधर्म
॥ राजोवैवस्वतोदंडधरश्चकाल
॥ भूताधिपोदत्तकृतानुसारीकृतो
॥ तमेनदत्वाभिजपंति ॥ १ ॥ १० ॥ दश
॥ वारजपकरावा

१३७

न्यन्यो

१ महांस· कृष्णाहं भंमं
१ मण्डल· लक्षिमं· १
१ मंडैस· मृह्नि· १
१ मण्डल· मारत्लिमं

४

अथग्रहा

१ आकृष्णेनमंत्र· आदित्यं
२ आप्यायस्व·मंत्र· १ सोमं ॥
३ अग्निर्मूर्द्धामंत्र· १ भौमं ॥
४ उद्बुध्यस्वमंत्र· १ बुधं ॥
५ बृहस्पतेमंत्र· १ बृहस्पतिं
६ शुक्रेशु· १ शुक्रं ॥
७ शन्नोदेवीमंत्र· १ शनिं ॥
८ कयानश्चित्रमंत्र· १ राहुं ॥
९ केतुंकृण्वन्मंत्र· १ केतुं ॥ ९

९

१ त्र्यम्बकंमंत्र· १ ईश्वरं ॥
२ गौरीर्मिमायमंत्र· १ उमा ॥
३ यदक्रन्दमंत्र· १ स्कंदं
४ विष्णोरराटमंत्र· १ विष्णुं ॥
५ ब्रह्मजज्ञानंमंत्र· १ ब्रह्माणं ॥
६ इंद्रोविश्वमंत्र· १ इंद्रं ॥
७ यमायसोममंत्र· १ यमं ॥
८ कोसुतःपमंत्र· १ कालं ॥
९ उभावाजंमंत्र· १ चित्रगुप्तं ॥

९

१ अग्निंदूतंमंत्र· १ अग्निं
२ अप्सुमेसोमामंत्र· १ अपः ॥
३ स्योनापृथिविमंत्र· १ भूमिं ॥
४ इदंविष्णुर्विमंत्र· १ विष्णुं ॥
५ इंद्रमेहोत्रीमंत्र· १ इंद्रं ॥
६ इंद्राणीमासुमंत्र· १ इंद्राणीं ॥
७ प्रजापतेनमंत्र· प्रजापतिं
८ आयंगौःमंत्र· १ सर्पान् ॥
९ ब्रह्मजज्ञानंमंत्र· ब्रह्माणं

९

१ गणानांत्वागणमंत्र· १ विनायकं
२ जातवेदसेमंत्र· १ दुर्गां ॥
३ [illegible]मंत्र· १ वायुं ॥

१ आदित्यंगर्भंमंत्र· १ आकाशं

आग्निनाः १ एवोउषा अं कं १
वांस्नो धंमिं १ वास्तोष्पतिमं कं १
होन्न धां ७ क्षेत्रस्य पतिं कं १

[illegible]

८

१ [illegible] १ इंद्रं विश्वा अं कं १
२ [illegible] १ अग्निं दूतं कं १
३ [illegible] १ यमाय सोमं कं १
४ [illegible] १ मो षु णः परा कं १
५ [illegible] १ त्वं सो अस्य कं १
६ [illegible] १ स न वायव कं १
७ [illegible] १ सोमो धेनुं सो कं १
८ [illegible] १ तमीशानं जगत कं १

८

[illegible]

१ [illegible] सर्व [illegible]
२ [illegible] सोम [illegible]
३ [illegible] सोम [illegible]
४ [illegible]
५ [illegible]
६ [illegible]
७ [illegible]
८ [illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ यो देवः सविता स्माकं धियो धर्मादि गोचरे ॥

॥ प्रेरयेत्तस्य यद्भर्गस्तद्वरेण्यमुपास्महे ॥१॥

॥ तदित्यवाङ्मनोगम्यं ध्येयं यत्सूर्यमण्डले ॥

॥ सवितुः सकलोत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणः ॥

॥ वरेण्यमाश्रयणीयं यदाधारमिदं जगत् ॥

॥ भर्गः स्वसात्सात्कारेण हेमाविद्याकार्यदाहकं

॥ देवस्य द्योतमानस्य आनन्दक्रीडनोपि वा ॥

॥ धी[illegible] ॥

॥ धियोऽन्तःकरणवृत्तीः सत्कर्मप्रपञ्चारिणी

।यथैलिंगनिर्दृश्य सायुज्यं नादेवदेवः
।नोस्माकं बहुधा भेद स्यु भेद भिन्न दृष्टे
।यथा ग मन्त्रोदयान्न मर्त्यवपुप्रायु नित्य
।भवि सिद्ध्यते । वेदव्यासेन संप्रोक्त
।व्यासवाक्यं न संशयः । ... वद वा
।सवि सच्चिदानंद ... मानस

श्रीगणेशायनमः॥अथमन्युसूक्तविधानसंक्षेप॥अद्ये॰
तापसोमन्युप्रीत्यर्थेमन्युसूक्तजपारंभकर्म॰आसनवि
धिन्यासांश्च॰ ॐ संसृष्टंधनमुभयंसमाकृतं। क्रां ॐ अंगु
ष्ठाभ्यांनमः। ॐ अस्मभ्यंदत्तांक्रीं ॐ तर्ज॰ ॐ वरुणश्च
मन्युः क्रूं ॐ मध्य॰ ॐ भियंदधानाहृदयेषुक्रैं ॐ अनामि॰
ॐ शत्रवःपराजितासः क्रौं ॐ कनि॰ ॐ अपनिलयंतां
क्रः ॐ करत॰ एवंहृदयादि। अथध्यानं॥ ज्वलनातिप्र
तीकाशंजटामंडलमंडितं। ब्रह्मश्रियाविराजंतंदीप्यमा
नमुखांबुजं। पद्मासनेसमासीनंध्यायेत्तंध्यानमुद्रया।
ध्यायेत्तंतापसंमन्युंमालाभीष्टधरंपरं। मानसपूजां
कृत्वा। यस्तेमन्योइतिचतुर्दशर्चस्यसूक्तस्यतापसोम
न्युर्ऋषिः। मन्युर्देवता॥ त्रिष्टुप्छंदः। आद्याश्चांत्याश्च
तस्रोजगत्यः। यस्तेमन्योइतिबीजं। अभीहिशक्तिः।
संसृष्टंधनमुभयमितिकीलकं। तापसोमन्युप्री
त्यर्थेजपे॰॥ हरिःॐ॥ ऋ॰मू॥ यस्तेमन्योविधद्वज्रसा
यकसहओजःपुष्यतिविश्वमानुषक्॥ साह्यामदा

समार्यंत्वयायुजासहस्कृतेनसहसासहस्वता
अंतेउत्तरन्यासं

श्रीगणेशाय नमः॥ अथ मन्युसूक्तविधान संक्षेप॥ अद्ये॰
तापसोमन्युप्रीत्यर्थेमन्युसूक्तजपारंभकर्म॰ आसनवि
धिन्यासाश्च॰ ॐ संसृष्टं धनमुभयंसमाकृतं। ह्रां ॐ अंगु
ष्ठाभ्यांनमः। ॐ अस्मभ्यंदत्तां ह्रीं ॐ तर्जं॰ ॐ वरुणश्च
मन्युः ह्रूं ॐ मध्य॰ ॐ भियंदधाना हृदयेषु ह्रैं ॐ अनामि॰
ॐ शत्रवः पराजितासः ह्रौं ॐ कनि॰ ॐ अपनिलयंतां
ह्रः ॐ करतं॰ एवंहृदयादि॥ अथ ध्यानं॥ ज्वलनालेप्र
तीकाशांजटामंडलमंडितं। ब्रह्मश्रिया विराजंतं दीप्यमा
नमुखांबुजं। पद्मासनेसमानीतं ध्यायेत्तं ध्यानमुद्रया।
ध्यायेत्तं तापसं मन्युमालाभीष्टधरंपरं। मानसपूजां
कृत्वा। यस्तेमन्योऽद्दिति चतुर्दशर्चस्यस्य सूक्तस्य तापसोम
नुर्ऋषिः। मन्युर्देवता॥ त्रिष्टुप्छंदः। आद्याश्चांत्याश्च
तस्त्रोजगत्यः। यस्तेमन्योऽद्दितिबीजं। अभीहिशक्तिः।
संसृष्टंधनमुभयमितिकीलकं। तापसोमन्युप्री
त्यर्थेजपे॰॥ हरिः ॐ॥ मू॥ यस्तेमन्योविधद्वज्रसा
यकसहओजः पुष्यति विश्वमानुषक्॥ साह्यामदा
समायँस्व यातुआ [illegible]

अंतेउत्तरन्यासं

श्रीगणेशाय नमः॥ अथ मन्युसूक्तविधानसंक्षेप॥ अद्येः
तापसो मन्युप्रीत्यर्थे मन्युसूक्तजपाख्यकर्म॰ आसनवि
धिन्यासांश्च॰ ॐ संसृष्टं धनमुभयं समाकृतं। क्रां ॐ अंगु
ष्ठाभ्यां नमः। ॐ अस्मभ्यं दत्तां क्रीं ॐ तर्जं॰ ॐ वरुणश्च
मन्युः क्रूं ॐ मध्य॰ ॐ भियं दधाना हृदयेषु क्रैं ॐ अना मि॰
ॐ शत्रवः पराजितासः क्रौं ॐ क नि॰ ॐ अपनिलयंतां
क्रः ॐ करतं॰ एवं हृदयादि। अथ ध्यानं॥ ज्वलनालप्र
तीकाशं जटामंडलमंडितं। ब्रह्मश्रिया विराजंतं दीप्यमा
नमुखांबुजं। पद्मासने समानीतं ध्यायेत्तं ध्यानमुद्रया।
ध्यायेत्तं तापसं मन्युं मालाभीष्टधरं परं। मानसपूजां
कृत्वा। यस्ते मन्योऽविधदिति चतुर्दशर्चस्य सूक्तस्य तापसो म
न्युर्ऋषिः। मन्युर्देवता॥ त्रिष्टुप् छंदः। आद्याश्चांत्याश्च
तस्रो जगत्यः। यस्ते मन्योऽविधदिति बीजं। अभीहि शक्तिः।
संसृष्टं धनमुभयमिति कीलकं। तापसो मन्युप्री
त्यर्थे जपे॰॥ हरिः ॐ ॥ यस्ते मन्योऽविधद्वज्रसा
यक सह ओजः पुष्यति विश्वमानुषक्॥ साह्याम दा
सम् आर्यं [illegible] तेन सह सासहदख्ता।

अंते उत्तरन्यासं

मन्युरिंद्रो मन्युरेवास देवो मन्युर्होता वरुणो जातवेदाः॥
मन्युं विश ईळते मानुषीर्याः पाहि नो मन्यो तपसा सजोषाः

वैन्नः मधुः

[illegible]

रेवती ५-

[illegible]

[illegible]

अश्विनीमेषेऽर्के

[illegible]

[illegible]

कंनमः दक्षिणबाहुमूले॥ खंनमः दक्षिणकूर्परे॥
गंनमः दक्षिणमणिबंधे॥ घंनमः दक्षिणहस्तांगु
लिमूले॥ ङंनमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रेषु॥१॥ चंनमः
वामबाहुमूले॥ छंनमः वामकूर्परे॥ जंनमः वामम
णिबंधे॥ झंनमः वामहस्तांगुलिमूलेषु॥ ञं
नमः वामहस्तांगुल्यग्रेषु॥२॥ टंनमः दक्षिणपाद
मूले॥ ठंनमः दक्षिणजानुनि॥ डंनमः दक्षिणगु
ल्फे॥ ढंनमः दक्षिणपादांगुलिमूलेषु॥ णंन
मः दक्षिणपादांगुल्यग्रेषु॥३॥ तंनमः वामपाद
मूले॥ थंनमः वामपादजानुनि॥ दंनमः वामपाद
गुल्फे॥ धंनमः वामपादांगुलिमूलेषु॥ नंनमः
वामपादांगुल्यग्रेषु॥४॥

रिहारार्थं यक्ष्माणां तर्पयाम्यहं ॥ अग्निदग्धा
श्चये जीवा ये प्यदग्धाः कुले मम ॥ भूमौ
दत्तेन तोयेन तृप्ता यांति परांगतिं ॥ ये वृ
क्षेषु ये गुहेषु पितरो ये व्यवस्थिताः ॥
ते सर्वे तृप्तिमायांतु मया सृष्टं शिखोद
कं ॥ उत्तरीयवस्त्रं तटे निष्पीड्य ॰ पुरुषसूक्तं
पठेत् ॥ ५२ ॥ हिरण्यशृंगं वरुणं प्रपद्ये ती
र्थं मे देहियाचितः ॥ यन्मयाभुक्तमसाधूनां
पापेभ्यश्च प्रतिग्रहः ॥ यन्मे मनसा वाचा कर्म
णा वा दुष्कृतं कृतं ॥ तन्न इंद्रो वरुणो बृहस्प
तिः सविता च पुनंतु पुनः पुनः ॥ नमो ग्नये
प्सुमते नम इंद्राय नमो वरुणाय नमो वारुण्यै
नमो ऽद्भ्यः ॥ यदपां क्रूरं यदमेध्यं यदशांतं तद
पगच्छतात् ॥ सोहमपापो विरजो निर्मुक्तो
मुक्तकिल्बिषः ॥ नाकस्य पृष्ठमारुह्य ग
च्छेद्ब्रह्मसलोकतां ॥ यश्चाप्सु वरुणः स

पुनात्वघमर्षणः ॥

श्रीगणेशायनमः। अथपूर्वोक्त०। श्रुतिस्मृति
पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थंश्रीरस्तु अर्थगंगा
तीर्थेप्रातःस्नानमहंकरिष्ये। स्नात्वा॥ तीर्थं
प्रार्थयेत्॥ हिरण्यशृंगंवरुणंप्रपद्ये० इमंमे
गंगे० इदंते न्यायिर० गंगागंगेतियो० समुद्र
ज्येष्ठा० एतोन्विंद्रं० तरत्समंदी० आभिर्द्ध
देव० पावमानी स्वस्त्यय० आपोहिष्ठा० म
जंति॥ इमंमेगंगे० उदकमालोड्य॥ ऋतं
चेत्यघमर्षणं॥ ततःप्रवाहाभिमुखोंजलिं
जपित्वा। चम्य। अथस्नानांगतर्पणं। ब्रह्मा
द्यायेदेवाः। तांदेवांस्तर्पयामि॥ भूर्देवां०
भुवर्देवां० स्वर्देवां० भूर्भुवस्वर्देवां० कृ
ष्णद्वैपायनाद्यायेऋषयः तान्नृषीं
स्त० भू० भु० स्व० भूर्भुवस्व०। सोमःपितृ
मान्यमोंगिरस्वानग्निष्वात्ताः कव्यवाहना
द्योयेपितरः॥ तान्पितृंस्त० भूः० भु०
स्वः० भूर्भुवस्वःपितृं०॥ यन्मयादूषितं

तोयंशारीरमलसंभवात्॥ तद्दोषप

५३ पू. दादास सा. नं. गुरुजी-हृदिस्थं | आपला जयराम —

~~चिरंजीव हृदय हा.मारे ता. न्दू ... दो. सा. कारून पत्र~~

श्रीयुत पू. रा. रा. दादास शिरसाष्टांग नमस्कार वि. वि. आहे रा. रा. जयराम शास्त्रींचे पू. रा. रा. दादास शिरसाष्टांग नम. रा. रा. जयराम शा. चा विचार होळीचे आंत काशीत पोंहचण्याचा होता परन्तु मध्येच ही सर्व गडबड झाल्यामुळे येऊ शकले नाहीत अता वर्षप्रतीपदे चे आंत सर्व मंण्डळी बरोबरच येऊ जसे इतके दिवस झाले तसे अणीक १५ दिवस राहून येतील. रा. रा. जयराम शा. चे सर्व मंण्डळीस यथायोग्य नम. आ. सांगणे। मात्के घरी ही सर्व कुशलक्षेम कळवून देणे। पू. सौ. मामीस शि. नमस्कार। चि. सौ. जमुताई चि. सौ. गोदूताई चि. सौ. सोनूताई चि. मानी चि. प्रेमी चि. वामन चि. बेबी यांस सर्व मंण्डळीचे अनेक शुभआशिर्वाद। या लीफाफ्यात एक पत्र नायकजी चे मांणसाचे आहे रा. रा. नायकजी कडे देऊन देणे ~~व एक पत्र रा. रा. ... त्यांचे असेल त्यांने घरी~~ देऊन देणे। रा. रा. जयराम शा. होळीचे पहिले येतेत परन्तु या सर्व भानगडी मुळे खेताचा बन्दोबस्त होऊ शकला नाही. तर खेताचा बन्दोबस्त करून वर्षप्रतीपदेचे आंत अवश्य २ पोंहचतील:——

सर्व मंडळीस यथायोग्य नम. आ. सांगणे, पत्रोत्तर शीघ्र २ पाठवीणे

शुभमस्तु

आपला
गोविंद चोचर

शनीवार ॥श्री॥ मु. पोहरा
ता० ८-३-४१

श्रीयुत चि. बाळकृष्णराव यांस अ. शुभ आशीर्वाद
शंद्रपोः नि. नि. आपले कडे काल रोजी गं. भीकी
जीजी बरोबर एक पत्र पाठवीले आहे व पोह-
र्या हून पू. रा. रा. अण्णा ने ही पत्र पाठवीले आहे
ते पोंच लेच असेल. काल रोजी सकाळ चे गाडी
ने गं. भीकी जीजी बितियाहून रवाने होऊन का-
शीत गेलीत नन्तर दुपारी १२ वाजत्ता पू. रा. रा.
अण्णाचे पत्र घेऊन चण्डी मिसीर बितियात
आला. पू. रा. रा. अण्णाचे पत्रावरून असे सम-
जलेकी काही रकम बरामद झाली आहे तर
तुम्ही पोहऱ्यात चालले या. पू. रा. रा. अण्णाचे
पत्र आल्यानन्तर काल संध्याकाळी बितिया-
हून रवाने होऊन पोहऱ्यात आलो. इथे आ-
ल्यावर सर्व हकीकत समजली. माल जवहर
तीन हिश्शे बरामद होऊन अपल्या हाती पडले
अता जवहर तीन चार शे चा फरक पडतो आहे
तो ही इश्वर कृपेनी मिळून जाइल. काळजी करु
नये।. मोतीहारी हून एक मुसलमीन आले होते
त्यांचे प्रभावाने हे सर्व कार्य झाले व बाकी चे
ही होऊन जाइल असा त्यांनी जिम्मा आहे।
काळजी चे कारण नाही इश्वर कृपेने जसे हे
पार पडे तसे तेही पार पडेल. इथे काल श्री
बरगजी चे व श्री सत्यनारायणचे पूजन झाले-

मह्यं तुभ्यमनंताय तुभ्यं मह्यं शिवा
त्मने ॥ नमो देवाधिदेवाय पराय पर
मात्मने ॥१॥ यो भुंक्ते द्वादशाहे
प्रथमऽतु दिने मासिके प्रेत यो
नौ कु श्राद्धे च विहेम्बलि पुचे
मरणे सर्वसंस्कार कृत्ये ॥ यज्ञे दा
ने च होमे त्रिविध मख कुले
शांति के पौष्टि के वा नो कृत्यः
सर्वथा वै स सकल गुणाद्युतः
प्रेत रूपी स विप्रः ॥१॥ अर्कोपि
छिन्नभानुमाद्यु • गाणोद्य प्रसदिन
कृमादीशांत्यादि पुंचा नरो लगन्य एव च या
यंथः स्त्रीच्च हिः ॥ अंतः कृत्तनि बाहिर्गतानि
सकलान्येवं मासंविरव्य
टांत्यमंगल भुरवं शंसेमि भागोदयः ॥३
अंतरं गोत्रीपक्ष स्यामाकार माससेन चय
तदे लेपक्षमेकं स्यादिने चैव रुआव हे ॥२

जलधिमथनमंदरपरमंदर
मपनयतमे ॰ नारायण
करुणामयशरणंकरवाणि
तावकौचरणौ ॥ इतिष
ट्पदीमदीये वदनसरोजे
सदावसतु ॥

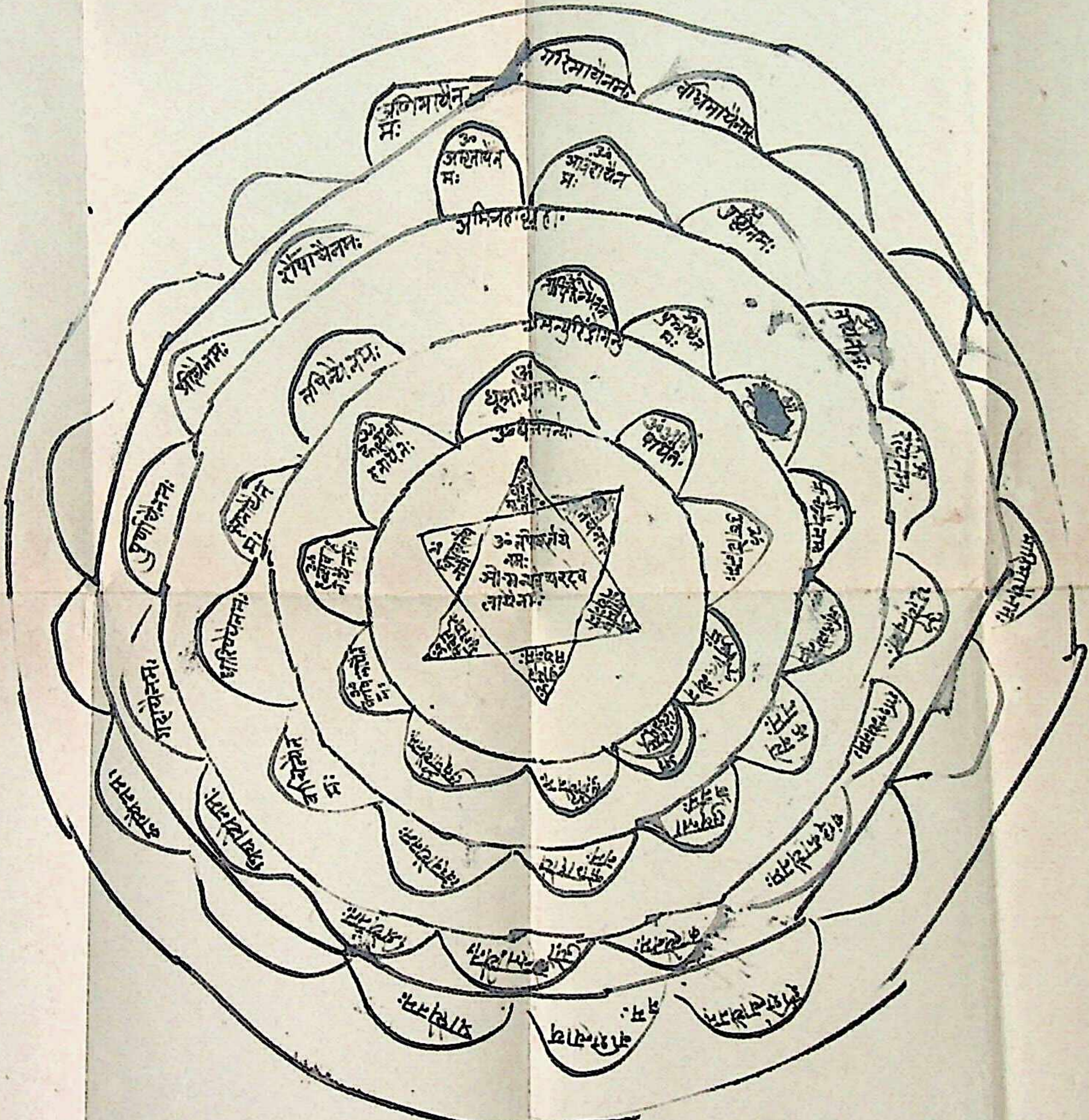
सूर्यश्री दिशदिक्षो विशम सम दिशः सा
भिजिद्दशमीमे: सत्येरेन बीहिश्यांनेचर
पायस्यभायं चर्कं यवानि छेत्र ॥ भूयोः रुत
नुं विद्धिवा सकलतनुभृतस्त त्रवासं नकु
र्युः षण्मासार्धार्धमासं तदुपरि विधिव
द्वांतिकः स्वस्ति भूयात् ॥ ३

[illegible]

ईशान्य

पूर्व

आग्नेय



अं॰ गि॰ अः॰ मु॰

कं नमः दक्षिणबाहुमूले॥ खं न॰ दक्षिणकूर्परे॥
गं न॰ दक्षिणमणिबंधे॥ घं न॰ दक्षिणहस्तांगुल्य
मूले॥ ङं न॰ दक्षिणहस्तांगुल्यग्रेषु॥ चं न॰
वामबाहुमूले॥ छं न॰ वामकूर्परे॥ जं न॰ वाममणि
बंधे॥ झं न॰ वामहस्तांगुलिमूलेषु॥ ञं न॰ वाम
गुल्यग्रेषु॥ टं न॰ दक्षिणपादमूले॥ ठं न॰ द॰ जानु
नि॥ डं न॰ द॰ गुल्फो॥ ढं न॰ द॰ पादांगुल्यग्रेषु
णं न॰ दक्षिणपादांगुल्यग्रेषु॥ तं॰ वामपा
थं न॰ वामपादजानुनीः॥ दं॰ वामपादगुल्फो॥
न॰ वामपादांगुलिमूलेषु॥ नं॰ वामपादाग्र
गुं॰ पं॰ पं पर॰ पं॰
दक्षिणभुजेगां॰ वामभुजेदुं दु॰। दक्षिणजानं

वसरः॰ अ॰ पं॰ यथागारमः
से॰ रं र॰ लं॰